मुगल शासन व्यवस्था

1. मंत्रिपरिषद को विजारत कहा जाता था।

2. सूचना एवं गुप्तचर विभाग का प्रधान दरोगा-ए डाक चौकी कहलाता था।

3. खालसा भूमि → प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में

4. जागीर भूमि → तनख्वाह (वेतन) के बदले दी जाने वाली भूमि।

5. सयूरगाल या मदद-ए-माश → अनुदान मे दी गई लगानहीन भूमि। इसे मिल्क भी कहा जाता था।

6. अकबर के द्वारा करोड़ी नामक अधिकारी की नियुक्ति की गयी थी। इसे अपने क्षेत्र से एक करोड़ दाम वसूल करना पड़ता था।

7. अकबर ने दहसाला नाम की नीति कर प्रणाली प्रारंभ की। इस व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि को चार भागों मे विभाजित किया गया →

8. पोलज → इसमें नियमित रूप से खेती होती थी (वर्ष में स्वयं)

9. परती → इस भूमि पर एक या दो वर्ष के अन्तराल पर खेती की जाती थी।

10. चाचर → इस पर तीन से चार वर्ष के अन्तराल पर खेती की जाती थी।

11. बंजर → यह खेती योग्य भूमि नहीं थी, इस पर लगान नहीं वसूला जाता था।

मुगल काल में कृषक तीन वर्गों में विभाजित थे-

12. खुदकाश्त → ये किसान उसी गाँव की भूमि पर खेती करते थे, जहाँ के वे निवासी थे।

13. मुजारियन → खुदकाश्त कृषकों से भूमि किराए पर

Scanned with CamScanner

लेकर कृषि कार्य करते थे।

(14) मुगल काल में रुपए की सर्वाधिक ढलाई औरंगजेब के समय में हुई।

(15) आना सिक्के का प्रचलन शाहजहाँ ने करवाया।

(16) मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था पूर्णतः मनसबदारी प्रथा पर आधारित थी। इसे अकबर ने प्रारंभ किया था।

(17) जात → जात से व्यक्ति के वेतन एवं प्रतिष्ठा का ज्ञान होता था।

(18) सवार → सवार पद से घुड़सवार दस्तों की संख्या का ज्ञान होता था।

(19) जहाँगीर ने सवार पद में दो-अस्पा एवं सिंह-अस्पा की व्यवस्था की।

मुगलकालीन लगान वसूल करने की व्यवस्थाएँ :→

(20) गल्ला बख्शी →
इसमें फसल का कुछ भाग सरकार द्वारा ले लिया जाता था।

(21) नसक :→ इसमें खड़ी फसल के आधार पर लगान का अनुमान लगाकर फसल कटने पर उसे ले लिया जाता था। यह व्यवस्था बंगाल में थी।

(22) जब्ती :→ इसमें बोई गई फसल के आधार पर लगान का निश्चय किया जाता था, जो नकद लिया जाता था।

(23) औरंगजेब के समय में असद खान ने सर्वाधिक 31 वर्षों तक दीवान के पद पर कार्य किया।

(24) लगानहीन भूमि (मदद-ए-माश) का निरीक्षण सद्र करता था।